कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में - ----------

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय चित्रकला

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक २५-०६-२०

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

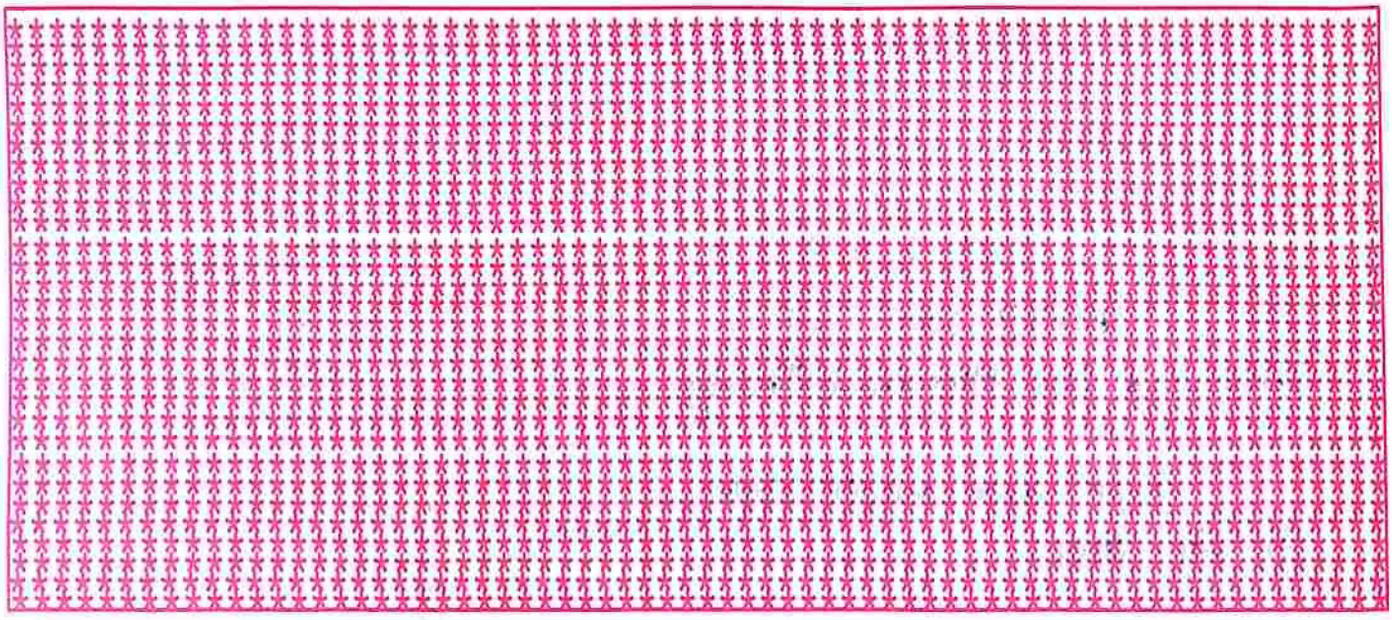
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों मे
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020



परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-अ

उत्तर ⇒ देलवाडा जैन मन्दिर राजस्थान के जिले सिरोही
(1) (माउण्ट आबू) से 2 किमी. दूर स्थित हैं।

उत्तर ⇒ देलवाडा जैन मन्दिर जैन धर्म को समर्पित हैं। जो
(2) वास्तुकला, स्थापत्यकला एवं अलंकरणों की दृष्टि से अनुपम हैं। जहाँ जैन श्राविका, महाविद्या, यक्ष-यक्षिका, कृष्ण-लीला, गजलक्ष्मी आदि प्रमुख विषय हैं।

BSER-167/2020

उत्तर ⇒ रणकपुर जैन मन्दिर राजस्थान में पश्चिमी मारवाड़
(3) के पाली जिले के सादड़ी गाँव से 8 किमी. दूर स्थित हैं।

उत्तर ⇒ राजस्थान के खजुराहो के नाम से 'किराडू (बाड़मेर)'
(4) जाना जाता है। तथा अम्बिका माता मन्दिर, जगत (उदयपुर) को भी राजस्थान का खजुराहो कहा जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒ आभानेरी (दौसा) का प्राचीन नाम आभा-
(5) नगर है। जिसमें अत्यन्त भव्य मंदिर तथा बावड़ियाँ निर्मित हैं।

उत्तर ⇒ 'चाँद बावड़ी' का निर्माण 9वीं शताब्दी में
(6) 'राजा मिहिरभोज (राजा चाँद)' ने करवाया था। जिसके नाम पर इसे चाँद बावड़ी कहा जाता है।

उत्तर ⇒ ऊषा रानी हूजा के सीमेन्ट शिल्प प्रसिद्ध हैं-
(7) (i) माइनर्स मॉन्यूमेन्ट (कोटा)

उत्तर ⇒ 'कलाविद्' गोपीचन्द्र मिश्रा भावपूर्ण व आध्यात्मिक
(8) मूर्ति शिल्प बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा को आगे बढ़ाया तथा 'सनातन धर्म मूर्ति आर्ट' की स्थापना की।

क्षक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒ 'पद्मश्री' अर्जुनलाल प्रजापति का प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प-
(9) (i) बणी - ठणी
मूर्तिशिल्प संगमरमर का बना है। जिसमें वस्त्रों की सिलवटें और घूंघट की पारदर्शिता दर्शनीय है।

उत्तर ⇒ पंकज गहलोत के मूर्तिशिल्पों का प्रमुख माध्यम
(10) काला पत्थर रहा। जिन्होंने उसे तराश कर हीरे जैसा मूल्यवान बना दिया।

उत्तर ⇒ उस्ताद मालीराम शर्मा को राजस्थान का माइकल
(11) एंजिलो कहा जाता है। इन्होंने यथार्थवादी मूर्तिशिल्प बनाये। इनके मूर्तिशिल्प यूरोपीय शास्त्रीय शिल्पों के समकक्ष थे।

उत्तर ⇒ 'माटी मानस संस्थान' की स्थापना राजस्थान के
(12) प्रसिद्ध मूर्तिकार 'पद्मश्री अर्जुनलाल प्रजापति' ने मूर्तिकला को बढ़ावा देने के लिए की।

BSER 16/7/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-ब

उत्तर ⇒ कम्पनी शैली के चित्रकारों ने विभिन्न भारतीय
(13) विषयों पर आधारित चित्र बनाये। प्रमुख विषय निम्न हैं:-

(i) दृश्य चित्र (ii) वनस्पतियों से सम्बन्धित
(iii) विभिन्न प्रकार की वेशभूषा व आभूषण
(iii) ऐतिहासिक व पुरातात्विक स्थल (iv) आखेट चित्र
(v) विभिन्न व्यवसायी से सम्बन्धित चित्र

उत्तर ⇒ कम्पनी शैली के प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि
(14) वर्मा ने अनेक भारतीय पौराणिक व धार्मिक चित्र बनाये। जिनमें प्रमुख निम्न चित्र है-

रावण और जटायु ➤ यह चित्र रामायण की घटना पर आधारित है। चित्र में रावण द्वारा सीता का अपहरण और जटायु का वध चित्रित किया। रावण की क्रोधयुक्त मुद्रा और सीता की असहाय अवस्था दर्शनीय है।

उत्तर ⇒ कम्पनी शैली के प्रमुख चित्रकार निम्न हैं-
(15) (i) थामस डेनियल
(ii) विलियम डेनियल

प्रश्न संख्या — परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर :-

(16) पेंग (प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप) की स्थापना 1947 ई. में आरा, सूजा व रजा नामक तीन चित्रकारों द्वारा की गई। आरा, सूजा, रजा, बाकरे, गाडे, हुसैन प्रमुख छः चित्रकार थे। पेंग ग्रुप का उद्देश्य रूढ़िवादी परम्पराओं को छोड़कर आधुनिकता को अपनाना था। चटक रंगों से ज्यामितीय आकारों में सामाजिक आदि विविध विषयों पर चित्रों की रचना की गई।

उत्तर :-

(17) 'मुर्गों की लड़ाई' चित्र के. के. हेब्बर (कांटिगेरि कृष्ण हेब्बार) का प्रसिद्ध चित्र है। जो नवीन प्रयोगवादी शैली पर आधारित चित्र है। चित्र में दो मुर्गों को आपस में लड़ते दिखाया है। एक मुर्गे ने दूसरे मुर्गे को घायल कर दिया जिसके शरीर से रक्त बह रहा है। पीछे हल्की रेखाओं से दर्शक मानवों को दिखाया है। प्रस्तुत चित्र मनुष्य की स्थिति को व्यंग्यात्मक प्रस्तुत करता है।

उत्तर :- 'दिल्ली शिल्पी चक्र' की स्थापना 25 मार्च 1949 ई. में भावेश चन्द्र सान्याल और धनराज भगत ने की। 'कला जीवन को प्रदीप्त करती है' के आदर्श वाक्य के साथ समूह की स्थापना हुई। जिसके प्रमुख चित्रकार के. सी. आर्यन, दयमंती चावला, दिनकर कौशिक, जया अप्पास्वामी, ब्रज मोहन भानोत थे। चक्र में कार्यरत कलाकार न केवल चित्रकार थे बल्कि, नाटककार, कवि, लेखक भी थे। जिनके विचार चक्र से मिलते जुलते थे।

BSER-16

परीक्षक द्वारा प्राप्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒

(19) जगदीश स्वामीनाथन की शैली नवीन प्रयोगवादी व समन्वयवादी थी। जगदीश स्वामीनाथन की कला में लोक व आदिवासी कला का समन्वय दिखाई देता है। जे० स्वामीनाथन ने प्रायः लाल व नारंगी तानों में ज्यामिती आकारों को चित्रित किया। जिनमें अधिकांशतः पर्वतीय आकारों में छोटे पक्षियों को हल्की आभा से चित्रित किया है।

उत्तर ⇒

(20) प्रसिद्ध ईरानी चित्रकार 'मीर सैयद अली जुदाई' व 'ख्वाजा अब्दुसमद शिराजी' ने मुगल कला का सूत्रपात किया। जिन्हें हुमायूँ अपने कला प्रेम के कारण ईरान से अपने साथ लाया था। जिन्होंने भारतीय विषयों को ईरानी शैली में चित्रित किया।

परीक्षक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - स

उत्तर :-

(21) दक्खिनी शैली के प्रमुख केन्द्र - विजयनगर, अहमदनगर, बीजापुर व गोलकुण्डा थे। दक्खिनी शैली का प्रसिद्ध चित्र- चाँद बीबी पोलो खेलते हुए > प्रस्तुत चित्र बीजापुर शैली का है। चित्र में चाँद बीबी को अन्य महिला खिलाड़ियों के साथ पोलो खेलते चित्रित किया है। पीछे पृष्ठभूमि हरी-भरी है। चेहरे चमकदार हैं। आगे की ओर सरोवर में फूल (कमल) खिले हुए हैं। चित्र के हाशिये पर फारसी लिपि में लेख लिखा हुआ है।

उत्तर :-

(22) किसी प्रसिद्ध व्यक्ति, इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों का व्यक्ति चित्र 'शबीह' कहलाता है। अकबर कालीन चित्रकार शबीह चित्र बनाने में दक्ष थे। 'राजा पृथु' का चित्र जो बनारस कला भवन में सुरक्षित है। शबीह चित्र का उत्कृष्ट उदाहरण है।

BSER-16/7/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (23) ⇒ जहाँगीर का काल मुगल कला का स्वर्णिम युग कहलाता है। जिसमें निम्न विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं-

(i) परम्परा के स्थान पर यथार्थता को बल देना ⇒ जहाँगीर कालीन कला में यथार्थ चित्रण अधिक हुआ है।

(ii) रंगों का प्रयोग ⇒ जहाँगीर कालीन चित्रकारों ने चमकदार रंगों का प्रयोग किया। गुलाबी, हरे, व सुनहरे रंगों का प्रयोग है। रंग सौम्य व हल्के हैं।

(iii) प्रकृति व पशु-पक्षी चित्रण ⇒ जहाँगीर कालीन चित्रकार 'उस्ताद मंसूर' पक्षी चित्र बनाने में दक्ष था। प्रकृति का मनोरम अंकन हुआ है।

(iv) रेखाएँ ⇒ जहाँगीर कालीन चित्र रेखाप्रधान हैं। रेखांकन गतिशील, महीन व बारीक है।

(v) वस्त्राभूषण ⇒ जहाँगीर काल के चित्रों में महिलाओं को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित बनाया है। पुरुषों को लम्बा जामा व पायजामा पहनाया है।

(vi) विषय ⇒ जहाँगीर कालीन चित्रों में प्राकृतिक व मानवीय भावों का समावेश हुआ। ऐतिहासिक चित्रण कम हुआ है। शबीह चित्र भी बने।

(vii) चित्रकार ⇒ मनोहर, गोवर्धन, बिसनदास, उस्ताद मंसूर, अबु हसन व अकारीजा प्रमुख जहाँगीर कालीन चित्रकार थे।

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर :- पहाड़ी शैली के विषयों में नायक - नायिका भेद

(२५) प्रमुख विषय है। चित्रों में प्रायः नायक को कृष्ण व नायिका को राधा के रूप में चित्रित किया है। कांगड़ा शैली में ~~तीनों~~ नायिकाओं स्वकीया, परकीया को मुख्य रूप से चित्रित किया है। पहाड़ी शैली में मुख्य रूप से नायिकाओं के आठ भेद माने हैं-

(i) उत्का या उत्कंठिता नायिका
(ii) वासक सज्जा नायिका
(iii) खण्डिता नायिका
(iv) विप्रलब्धा नायिका
(v) अभिसन्धिता नायिका
(vi) अभिसारिका नायिका
(vii) प्रोसितपतिका नायिका
(viii) अपसारिका नायिका

जिनमें से मुख्य रूप से उत्कण्ठिता, अभिसारिका को चित्रित किया है।

P.T.O

HSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर :-

(25) पहाड़ी चित्र शैली की सरसता, सरलता, मधुरता सभी को मन्त्रमुग्ध कर देती है। पहाड़ी चित्र शैली में निम्न विशेषताएँ प्रदर्शित होती हैं-

(i) रूप निर्माण ➤ पहाड़ी चित्र शैली के चित्रकारों ने मानवाकृतियों का अत्यन्त मधुर रूप निर्माण किया है। ऊँचा ढालदार माथा, नाक तथा होंठ को एक ही रेखा में चित्रित किया है। नयन पद्माकार तथा धनुषाकार हैं।

(ii) वर्ण विन्यास ➤ चमकदार रंगों का अमिश्रित एवं विरोधी प्रयोग बसोहली शैली में है। कांगड़ा शैली में ऊषा व इन्द्रधनुषी रंगों का प्रयोग है।

(iii) प्रकृति व पशु चित्रण ➤ पहाड़ी शैली के चित्रों में प्रकृति का जितना मनोरम अंकन है वैसा कहीं उपलब्ध नहीं है। पेड़-पौधों को क्षितिज से थोड़ा ऊपर व मोटी तथा बन्धनाकार रेखाओं से चित्रित किया। नायिका के साथ पक्षियों को बनाया है।

(iv) भवन निर्माण ➤ भवन निर्माण में अबरकी सफेद रंग का प्रयोग है। नक्काशीदार व अलंकृत स्तम्भ व मेहराबें चित्रित हैं।

(v) परिधान ➤ परिधान में स्त्रियों को कंचुकी, लंहगा व ओढ़नी तथा पुरुषों को पटका तथा जामा पहनाये बनाया है।

(vi) वाद्ययन्त्र ➤ वाद्ययन्त्रों में कृष्ण के साथ बाँसुरी, ढोलक, मृदंग, सितार आदि चित्रित हैं।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒

(26) रामगोपाल विजयवर्गीय

~~जन्म > 1905 ई. पश्चिम बंगाल के बाँ~~

खण्ड-द

उत्तर ⇒

(26) रामगोपाल विजयवर्गीय

जन्म > 1905 ई. में सवाईमाधोपुर के होटे से गाँव बालेर में हुआ।

कला शिक्षा > राजस्थान के महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट से कला की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। शैलेन्द्रनाथ डे के शिष्य रहे।

कलागत विशेषताएँ > रामगोपाल विजयवर्गीय नारी चित्रण में सिद्धहस्त थे। बंगाल शैली से प्रभावित होकर विभिन्न चित्र बनाये। रामगोपाल विजयवर्गीय का रंग बनाने का तरीका अनोखा था। चित्र में महत्वपूर्ण भाग को सजग रंगों से तथा बाद के हिस्सों को हल्के रंगों से चित्रित करते थे। विजयवर्गीय ने वॉश तथा टेम्परा पद्धति से कई चित्रों का निर्माण किया। महीन व कोमल रेखाओं का प्रयोग, रंग विधान, वक्र शारीरिक मुद्राएँ, मधुर मुस्कार, अधखुली आँखें, अजन्ता के समान पतली बाहें उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। टेम्परा तथा वॉश तकनीक का निर्माण करके मोम, ग्लिसरीन आदि के स्थान पर पायस के रूप में गोंद का उपयोग किया। जो उनकी निजी शैली 'विजयवर्गीय शैली' कहलाई। निकुंज लीला, खण्डिता राधा, प्रतिक्षारत राधा, मानिनी राधा इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।

ISER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

विभिन्न विषय व चित्र ➤ रामगोपाल विजयवर्गीय ने विभिन्न विषयों पर चित्र बनाये। ग्रामीण विषयों में- ग्रामीण, तमाशा दिखाते मदारी, गुब्बारे वाला, सावन, तीज, गणगौर आदि।
धार्मिक विषयों में - वानरों के साथ राम, लक्ष्मण व सूर्पणखा, विश्राम करते राम व सीता, जटायु वध, विरही राम, अर्जुन व उर्वशी, चतुर्भुज विष्णु, शिवमोह, धृतराष्ट्र - गाँधारी, साधु का तप आदि।
साहित्य आधारित - कादम्बरी, मेघदूत, विक्रमोर्वशीय, कुमारसंभवम् आदि। पद्मश्री विष्णु वाकणकर के शब्दों में "विजयवर्गीय के मेघदूत के चित्रों में भावगम्यता उतनी ही मधुर है जितनी कालिदास की कविता।"

पुरस्कार ➤ रामगोपाल विजयवर्गीय को राजस्थान ललित कला अकादमी का राज्य पुरस्कार मिला। भारत सरकार द्वारा 1984 ई. में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहित्य चित्रण ➤ लेखन कार्य -
काव्य संग्रह = अलकावली, चित्रगीतिका, चिंगारियाँ
कहानी संग्रह = मध्यम मार्ग
व्यंग्य रचना = शिवजी की अमेरिका यात्रा
कथा संग्रह = मेहंदी लगे हाथ, काजल भरी आँखें

BSER-16/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒

(27)

एलिफेंटा

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला का प्रमुख केन्द्र एलिफेन्टा मुम्बई से 6 मील की दूरी पर घारापुरी नामक द्वीप पर स्थित है। एकल पर्वत को काटकर विभिन्न मूर्तियों का निर्माण किया है। स्तम्भों पर, मूर्तियों का अलंकरण एलोरा के समकक्ष व बेजोड़ है।

शिव मन्दिर ➤ मुख्य शिव मन्दिर अपने प्रवेश द्वार से 60 फीट चौड़ा और 18-20 फीट ऊँचा है। गर्भगृह में त्रिशिरा शिव की 18 फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित है। जिसमें शिव को धीर-गम्भीर मस्तक, बोझिल पलकें तथा गुप्तकालीन होंठ रस पूरित भाव लिये बनाया है। बाईं ओर का मुख शिव का रौद्र रूप भैरव संहारक का है। जिसके हाथ में नरमुण्ड व गले में सर्पों की माला है। दाईं ओर का मुख पार्वती रूप आकर्षक मुकुट व मोतियों से सुसज्जित है।

मूर्ति के पार्श्व में दो स्तम्भ विष्णु तथा ब्रह्मा का प्रतीक है। दाईं ओर 16 फीट ऊँची अर्द्धनारीश्वर की प्रतिमा सृष्टि के संचालन का प्रतीक है। बाईं ओर शिव नटराज लोमहर्षक तथा शक्ति का प्रतीक है।

शिव गंगाधर तप तथा श्रम को सार्थक करता है। शिव की जटाओं से गंगा प्रवाहित हो रही है।

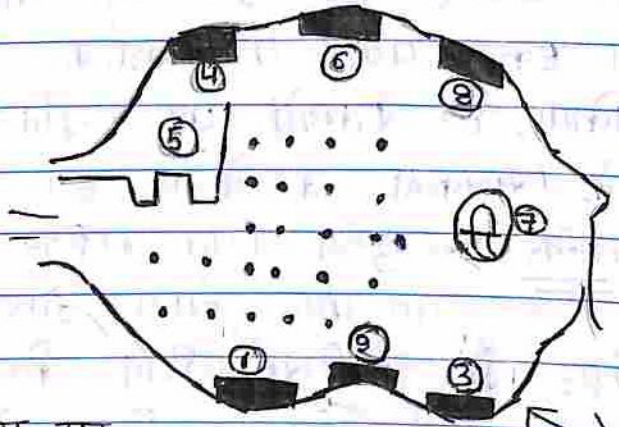
शिव योगेश्वर स्वयं की चित्त जागृति व आत्मिक भाव का प्रतीक है। विभिन्न प्रकार के आकर्षक मूर्ति-शिल्पों के मूर्तन से एलिफेन्टा के सम्बन्ध में 'सत्यम् शिवं सुन्दरम्' की भावना स्पष्ट परिलक्षित हो रही है। जो अत्यन्त आकर्षक है।

BSER-10/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

एलिफेन्टा के मूर्तिशिल्पो का निर्माण 7वीं सदी के पूर्वार्द्ध में चालुक्य काल में हुआ।



एलिफेन्टा मन्दिर

(i) प्रवेश द्वार
(ii) गर्भ गृह
(iii) शिवलिंग
(iv) शिव नटराज
(v) शिव योगेश्वर
(vi) शिव गंगाधर
(vii) शिव प्रसंग - अंधकण्डेश्वर
(viii) अन्य मूर्ति शिल्प

BSER/167/2020

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒

(२४) देवी प्रसाद राय चौधरी ने बाह्य परिवेश से हटकर अपने मूर्तिशिल्पों में भारतीयता का समावेश उनके प्रमुख मूर्तिशिल्प शहिद स्मारक (पटना), श्रम की विजय (चेन्नई), महात्मा गाँधी (कांस्य) आदि हैं।

शहिद स्मारक ➤

यह मूर्तिशिल्प देवी प्रसाद राय चौधरी का उत्कृष्ट शिल्प है। इसका निर्माण 1956 ई. में पटना के सचिवालय भवन के बाहर हुआ तथा स्थापना हुई। कांस्य माध्यम में बने इस मूर्तिशिल्प की ढुलाई पहले इटली में की गई। प्रस्तुत मूर्तिशिल्प में 11 अगस्त 1942 ई. को अनुग्रह नारायण की गिरफ्तारी के बाद हुई घटना का जीवन्त चित्रण किया है। जिसमें 7 स्कूली छात्रों ने ध्वज फहराने के संकल्प के साथ अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। मूर्तिशिल्प में उन छात्रों के नाम भी अंकित है। इसमें एक छात्र ध्वज लेकर आगे बढ़ रहा है। तीन छात्रों को निढाल पड़ते-गिरते हुए तथा एक को संभालते दिखाया है। दो छात्र सीना तान कर आगे बढ़ रहे हैं। मूर्तिशिल्प गति, लय तथा लावण्य का अद्भुत परिचायक है। लाइफ साइज में निर्मित शहिद स्मारक देशभक्ति की भावना से ओत प्रोत है।

श्रम की विजय ➤

'श्रम की विजय' नामक मूर्तिशिल्प 1959 ई. में बनाया गया। जो चेन्नई के निकट एक पहाड़ी पर स्थित है। इसी स्थान पर देश का प्रथम श्रमिक दिवस मनाया गया।

मूर्तिशिल्प में चार श्रमिक एक लकड़ी के कुन्दे

P.T.O ⇒

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

की सहायता से बड़ी चट्टान को हटाने का प्रयास कर रहे हैं। श्रमिकों के अर्द्धनग्न शरीर पर एक अधोवस्त्र तथा सिर पर साफा बंधा हुआ है। चट्टाने लुढ़काने की युक्ति तथा मांसपेशियों में होने वाले खिंचाव को आकर्षक रूप से प्रस्तुत किया है। मूर्तिशिल्प 'श्रम की विजय' नामक शीर्षक को सार्थक करता है।

उत्तर 7

किशनगढ़ शैली

(29)

स्थापना ➤

किशनगढ़ शैली मेवाड़ शैली की उपशैली किन्तु स्वतन्त्र शैली के रूप में प्रतिष्ठित है। मुगलों से अच्छे सम्बन्ध होने के कारण राज्याश्रय को प्राप्त किशनगढ़ में कला की पर्याप्त वृद्धि हुई। किशनगढ़ साम्राज्य की स्थापना 1609 ई. में राजा किशनसिंह द्वारा की गई। किशनगढ़ शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय एरिक डिकिन्सन व डॉ. फैयाज अली को है। जिनके प्रयासों के फलस्वरूप वर्षों से कपड़ भण्डार की गठरियों में बन्द पड़ा 'बणी-ठणी' चित्र 1943 ई. में उद्घाटित हुआ।

अन्य शासक व किशनगढ़ शैली ➤ किशनसिंह और उसके पुत्र सहस्त्रमल के समय में कला का समुचित विकास हुआ। पीढ़ी के पाँचवें राजा रूपसिंह ने कृष्ण भक्ति को ही जीवन का

क्षक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या

उद्देश्य माना। राजा मानसिंह के समय में कृष्ण-विषयक चित्र अधिक चित्रित हुए। राजा राजसिंह के समय में चित्रित 33 ग्रन्थ उस समय की कला का परिचायक है।

राजा सावंत सिंह ➤

1718 ई. में राजा सावन्त सिंह के समय में किशनगढ़ शैली ने करवट बदली। राजा सावन्त सिंह ने राज-काज से विरक्त होकर कृष्ण-भक्ति को ही जीवन का सार माना। राधा के रूप में उनकी प्रेयसी व दासी बणी-ठणी तथा कृष्ण के रूप में राजा सावंत सिंह को राधा-कृष्ण के रूप में चित्रित कर चित्रकार मोरध्वज निहालचन्द ने अमर कर दिया। राजा सावंत सिंह (1723-31 ई.) ने नागरीदास के रूप में नागर-समुच्चय, मनोरथ मंजरी, बिहारी चन्द्रिका, रसिक-बिहारी ग्रन्थ लिखे।

चित्र बणी-ठणी ➤

भारत की मोनालिसा कहलाने वाला यह चित्र मोरध्वज निहालचन्द ने 1735-1757 ई. के मध्य बनाया। जो किशनगढ़ शैली की पहचान बन गया। चित्र में अंकित नारी लज्जा युक्त, मधुर मुस्कान, कर्णांत कमलनयन है।

किशनगढ़ शैली की विशेषताएँ ➤

स्वर्ग को भी मन्त्रमुग्ध कर देने वाली कला की पारदृष्टि किशनगढ़ शैली की निम्न विशेषताएँ हैं-

(i) किशनगढ़ शैली में नर-नारी के अंग-प्रत्यंगों, प्रकृति का विराट अंकन, राधा-कृष्ण की माधुर्यपूर्ण

P.T.O ⇒

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कृतियाँ प्रमुखता से चित्रित हैं।

(ii) पुरुषाकृतियों में पुरुषों को समुन्नत ऊँचा ललाट, लम्बी नाक, हिगुली पतले अधर, नीलवर्णीय काया युक्त, श्वेत मूंगिया पगडी पहने कृष्ण के रूप में चित्रित किया है।

(iii) स्त्रियों को ऊँचा ललाट, तीखी नाक, मधुर मुस्कान युक्त पतले अधर, कमलाकार नयन, कपोलों तक आच्छादित पलकें, तंग कंचुकी व लहंगा पहने राधा के रूप में चित्रित किया है।

(iv) रंगों का सुमधुर तथा मनोरम प्रयोग है। लाल, पीला, नीला, गुलाबी रंग प्रमुखता से लिये गये हैं।

(v) किशनगढ़ शैली के प्रमुख विषयों में भागवत पुराण, गीत-गोविन्द, नायक-नायिका भेद प्रमुख हैं। शृंगारी मदन मोहन, ग्वाल-कृष्ण, बाल गोपाल स्तुति प्रमुख रूप से चित्रित हैं।

(vi) किशनगढ़ शैली के प्रमुख चित्रकार- सूर्यध्वज मूलराज, मोरध्वज निहालचन्द, सवाईराम, नानकराम, रामनाथ, ~~लाड~~ लाडलीदास, बदनसिंह प्रमुख हैं।
1820 ई. में लाडलीदास द्वारा चित्रित 'गीत-गोविन्द' बाद की शैली का परिचायक है।

BSER-16/7/2020

उत्तर ⇒

(30)

अवनीन्द्रनाथ टैगोर

जन्म ➤

बंगाल शैली के प्रणेता व प्रतिनिधि चित्रकार अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 1871 ई. में पं. बंगाल के जोरासांको में गगनेन्द्रनाथ के घर में हुआ था।

प्रारम्भिक चित्रशैली ➤

उस समय के अधिकांश चित्रकार मुगल शैली तथा यूरोपीय शैली में चित्रों का निर्माण कर रहे थे। अतः अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी मुगल शैली में चित्रों का निर्माण किया। बाद में उन्होंने यूरोपीय शैली में चित्रण किया हुआ। रवि बाबू के कहने पर उन्होंने चण्डीदास व विद्यापति की पदावली का अध्ययन किया व उस पर आधारित चित्र बनाये। रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुस्तक 'चित्रांगदा' पर आधारित चित्र उनके प्रथम चित्र माने जाते हैं।

भारतीय चित्रशैली का प्रयोग ➤

अवनीन्द्रनाथ टैगोर यूरोपीय शैली से भारतीय शैली की ओर अग्रसर हो चुके थे। जिसका प्रतिनिधित्व उनका 'शुक्लाभिसार' नामक चित्र करता है। जो इनका पूर्ण भारतीय शैली का प्रथम चित्र माना जाता है। भारतीय धार्मिक विषयों को उन्होंने चित्रित किया 'श्रीराम व मायामृग', 'बुद्ध व सुजाता' इसके उदाहरण हैं। भारतीय चित्रकारों को भी भारतीय व राजपूत शैली में चित्र निर्माण करने के लिए प्रेरित किया।

P.T.O ⇒

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ई. बी. हैवेल से सम्पर्क ➤

1896 ई. में ई. बी. हैवेल कलकत्ता कला विद्यालय के प्राचार्य बने जहाँ वे अवनीन्द्रनाथ के सम्पर्क में आये। हैवेल के कहने पर अवनीन्द्र बाबू ने राजपूत शैली, ईरानी शैली, जापानी शैली, पश्चिमी ईरानी शैली के समन्वय से एक शैली बनाई जो बंगाल शैली कहाई। 'कृष्ण चरित्र', 'बुद्ध चरित्र' आदि चित्रों की श्रंखला बनाई। तथा भारतीय चित्रकला को एक नवीन पथ दिया।

वॉश पद्धति में चित्रण ➤

1901-02 में जापानी चित्रकार ताईकान व हिसिंदा भारत आये। अवनीन्द्रनाथ ने उनसे जापानी प्रक्षालन की वॉश पद्धति को सीखा। 'विरही यक्ष', 'गणेश जननी' व 'उमरखय्याम' पर आधारित चित्र बनाये। तथा वॉश पद्धति प्रारम्भ की।

अन्य चित्रण ➤

1905-06 में मुगल शैली पर आधारित चित्र बनाये। 'बिल्डिंग ऑफ ताज', 'शाहजहाँ के अन्तिम दिन' इस शैली के उदाहरण हैं।

बंगाल विभाजन से प्रेरित होकर 1905 ई. में 'भारत माता' नामक चित्र बनाया।

1907 ई. में अपने भाई के साथ मिलकर ओरिएन्टल स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना की।

पेस्टल रंगों का प्रयोग ➤

1925-26 ई. में अवनीन्द्रनाथ

BSER-16/7/2020

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

ठाकुर ने पेस्टल रंगों का प्रयोग किया। 'महात्मा गाँधी', 'सी. एफ. एन्ड्रूज' के आवक्ष इस पद्धति के उदाहरण हैं।

'कजरी', 'देवदासी', 'पूजा', 'कवि कनकन चण्डी' आदि इनकी अन्य कृतियाँ हैं।

1941 ई. में रवीन्द्रनाथ टैगोर के महाप्रयाण के बाद इन्होंने अपनी तूलिका को लगभग त्याग दिया।

प्रमुख शिष्य >

अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने कला के जिस नये आन्दोलन को चलाया था। उसे उनके शिष्य - नन्दलाल बसु, उकील बन्धु, सुरेन्द्र नाथ गुप्त, देवी प्रसाद राय चौधरी, ओ. सी. गांगुली ने आगे बढ़ाया।

समाप्त

24/24 (चौबीस)

